श्वेतकेतु

गिरिजा कीर

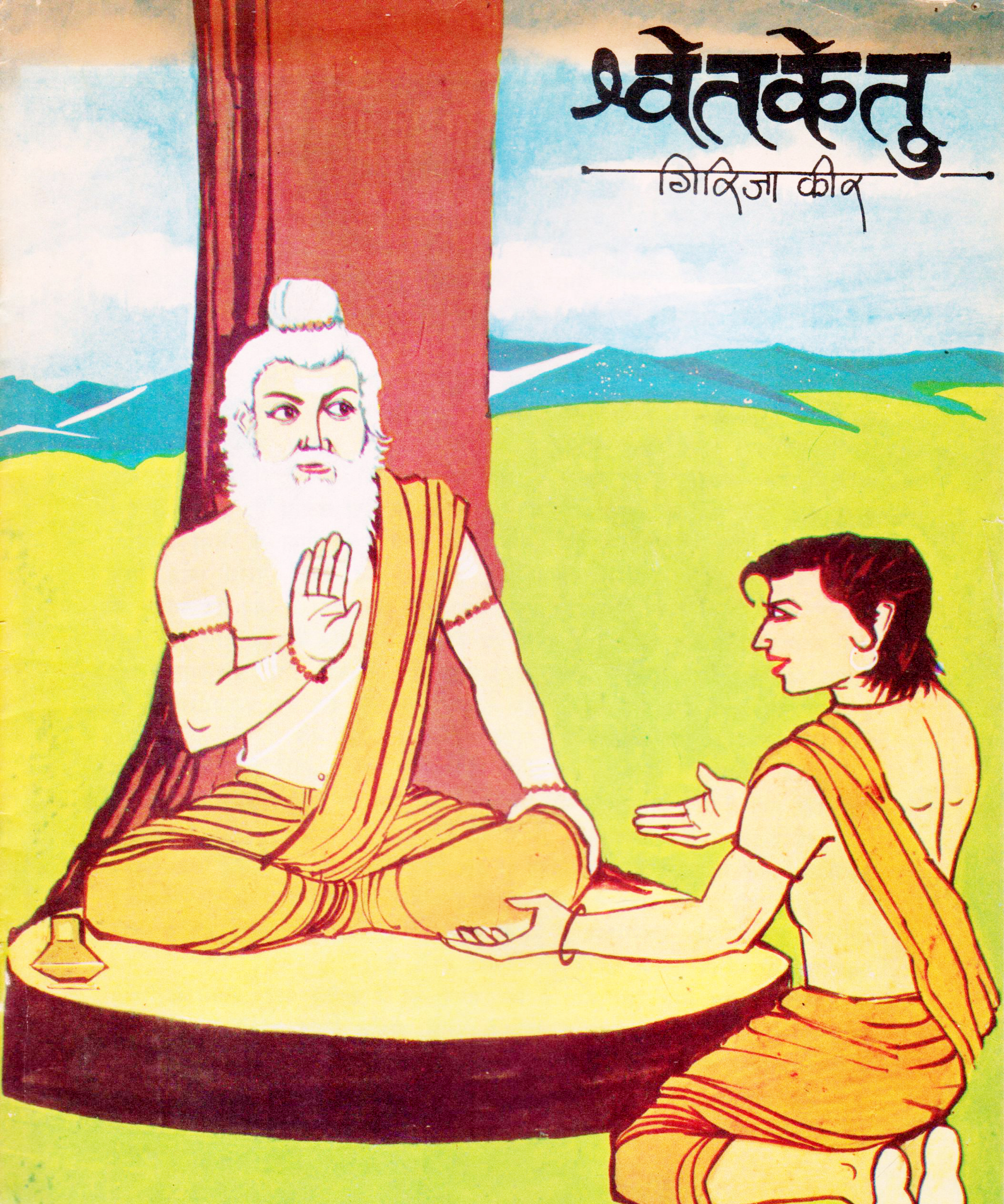

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

बच्चों की कहानियां

हमारे देश की संस्कृति दुनिया में सबसे पुरानी और काफी समृद्ध है। मगर आपसी झगड़ों, जलन और बैर की वजह से हम कमज़ोर हो गये हैं और इसी वजह से डरी-सहमी हालत में जी रहे हैं। नये ज़माने की शिक्षा भी हमें सुधार नहीं पाई है। इसीलिए इस कमजोर और खतरनाक हालत से हम उबर नहीं पा रहे हैं। फिर भी यह हक़ीक़त है कि हमारी संस्कृति अत्यंत जीवंत है, कभी मिट नहीं सकती है।

दूसरे प्राणियों के मुक़ाबले आदमी में यह एक विशेषता है कि उसमें धर्म की सूझबूझ है। अच्छा-बुरा, धर्म-अधर्म परखने का उसे विवेक है। मैं तो इसे ही सच्चा धर्म मानता हूं। धर्म वही है जिससे आदमी का सुखी, सार्थक जीवन बनता है। धार्मिक इन्सान समझता है कि दूसरों के सुख में उसका भी सुख है। दूसरों को तबाह करके कोई सुखी नहीं हो सकता। दूसरों के दुःख से जो सुख उठाता है, वह अधर्मी है।

सच्चाई और अहिंसा, धर्म पर चलने के दो रास्ते हैं। दुनिया के सभी धर्मों में इन दो बातों पर ज़ोर दिया गया है। हिन्दू, इस्लाम, बौद्ध, ईसाई, पारसी, जैन, सिख आदि सभी धर्मों के पैग़म्बरों ने धर्म के जिन आदर्शों की बात कही है, वह हर इन्सान के लिए समान रूप से लागू होती है। हमारे देश की परंपरा में सब धर्मों के लिए इज़्ज़त की भावना रही है। हिन्दू धर्म का दायरा बहुत बड़ा और सबका भला चाहनेवाला रहा है। अफ़सोस है तो इस बात का कि हम लोगों में एक के बाद एक कमज़ोरियां आती गईं और एक उदार धर्म की अनमोल दौलत हम संभाल नहीं सके।

आज इस बात की ज़रूरत है कि दुनिया के विकसित धर्मों में हमारे लिए जो आवश्यक बातें कही गयी हैं उन्हें हम समझें और अपने जीवन में उन पर चलने की कोशिश करें।

नई पीढ़ी को सही समझ और शिक्षा देने के लिए ऐसे विचार उनके सामने रखना ज़रूरी है जिससे वे आदर्शों की तरफ प्रेरित हों और ज़िन्दगी का सही रास्ता उन्हें मिल सके।

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा ने इसी उद्देश्य से दुनिया के मुख्य धर्मों में जो शिक्षाप्रद कहानियां हैं, बड़े-बड़े संत-पैग़म्बरों की ज़िन्दगी में जो सच्ची घटनाएं हुई हैं, उन्हें लेकर एक सौ सचित्र पुस्तकें छापने की योजना बनाई है।

कहानियां इस तरह रखी गयी हैं कि बच्चों को वे उपदेश नहीं, जीवन से जुड़ी हुई मालूम हों और आसानी से समझ में आ जायें। मुझे उम्मीद है कि बच्चों के माता-पिता भी इन कहानियों को दिलचस्पी से पढ़ेंगे और अपने जीवन को समृद्ध करेंगे।

मुझे उम्मीद है कि इस कोशिश को पसन्द किया जायेगा, इस पर अमल किया जायेगा और इसका प्रचार किया जायेगा।

मोरारजी देसाई

अध्यक्ष,
हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

श्वेतकेतु

गिरिजा कीर

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बम्बई

© हिन्दुस्तानी प्रचार सभा, १९८२

संपादक :

मूलशंकर भट्ट

चित्रकार :

नंदू राणे

प्रकाशक :

वाडीलाल डगली

मानद मंत्री

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा

महात्मा गांधी मेमोरियल बिल्डिंग

बम्बई–४०० ००२

मुद्रक :

अकील दीवानजी

ऑनलुकर प्रेस

१६, सासुन डाक

कोलाबा, बम्बई–४०० ००५

मूल्य :

दो रुपये

श्वेतकेतु

सदियों पहले की बात है। अपने देश में तब अनेक राजा राज्य करते थे। बच्चे बड़े होने पर ऋषिओं के पास पढ़ने जाते थे। ऋषि ही गुरू होते थे। उस समय की पढ़ाई भी अलग प्रकार की होती थी। बच्चे सिर्फ किताबी ज्ञान ही हासिल न करें बल्कि उनके जीवन में गुणों का भी विकास हो, इसका ख्याल रखा जाता था।

उस समय का समाज भी धर्म के मुताबिक चलनेवाला था। बुरे कामों से लोग हिचकते थे। सब लोगों के साथ दोस्ताना संबंध रखने का चलन था।

धौम्य ऋषि के तीन शिष्य थे– आरुणी, उपमन्यू और वेद। आरुणी आज्ञापालक और विनम्र था। वह पांचाल देश का रहनेवाला था।

एक बार गुरू ने आरुणी की परीक्षा लेने की सोची। हुआ यह था कि काफी बारिश के कारण खेत की मेढ़ टूट-फूट गयी थी। सूं... सूं... करता पानी खेत में घुस रहा था। धारा इतनी तेज थी कि उसे रोकना मुश्किल था। धौम्य ऋषि ने आरुणी से कहा, "बेटा आरुणी, खेत में जाओ और मेढ़ तोड़कर घुसनेवाले

पानी को रोको।"

आरुणी तुरंत खेत की ओर चल पड़ा। खेत में घुसनेवाले पानी का वेग, उसका डरावना रूप देखकर आरुणी सोच में पड़ गया कि इसे कैसे रोका जाये। बांध बनाने की कोई कोशिश सफल होनेवाली न थी। उसने एक बार सोचा कि वापस आश्रम जाकर गुरूजी को सारी बात बता दें। फिर उसे ख्याल आया कि इतनी देर में तो सारा खेत डूब जायेगा, फसल बर्बाद हो जायेगी। परिस्थिति जितनी कठिन थी, समय उतना ही कम था। आरुणी ने समय की कीमत समझी और टूटी मेढ़ पर आड़ा लेट गया। अपने शरीर से उसने एक बांध बना दिया। पानी का प्रवाह उसे धक्के तो मारता लेकिन पार नहीं कर पाता था। रात भर आरुणी इसी प्रकार पानी के थपेड़े खाता, लेटा रहा। दूसरे दिन गुरूजी उसका पता लगाने वहां आये।

रात भर में आरुणी का शरीर ठंड से अकड़ गया था, लेकिन उसने खेत डूबने

से बचा लिया था ।

आरुणी की यह हिम्मत देखकर धौम्य ऋषि गदगद हो गये । उन्होंने कहा, " बेटा आरुणी, तूने तो ऐसा काम किया है, जिसके बारे में सोचना भी मुश्किल था। तूने स्कूल के खेत को संकट से बचाया है । मैं तुझे वर देता हूं कि तू धर्म-शास्त्र-वेद आदि सारी विद्याओं में अव्वल रहेगा और तुझे दुनिया के सभी सुख मिलेंगे "

आरुणी आगे चलकर बहुत प्रसिद्ध हुआ । महातपस्वी उद्दालक के नाम से लोग उसे जानने लगे । कुछ दिनों बाद आरुणी के घर एक बेटे का जन्म हुआ । उसका नाम श्वेतकेतु रखा गया ।

श्वेतकेतु जैसे-जैसे बड़ा होने लगा, उसकी प्रतिभा दिखायी देने लगी । वह बड़ा होनहार और बुद्धिमान था, साथ ही था बड़ा नटखट । उसका पूरा दिन इधर-उधर भटकने में ही बीत जाता था । आरुणी को बहुत चिंता होने लगी कि अगर यह लड़का पढ़ेगा नहीं तो क्या करेगा ! श्वेतकेतु बारह साल का हो गया था, लेकिन गुरू के घर पढ़ाई के लिए जाने की उसकी कोई तैयारी नहीं दीखती थी ।

एक दिन आरुणी ने श्वेतकेतु को अपने पास बुलाया और कहा, " बेटा, तू इस तरह कबतक घर में बैठा रहेगा ? तुझे मालूम है, अपने खानदान में कोई ऐसा आदमी नहीं हुआ जिसने पढ़ाई न की हो । क्या तू अपनी पढ़ाई नहीं करेगा ? बेटा, घर से बाहर निकल और जीवन की जरूरी बातों का तजुर्बा कर ।"

पिता की बात मानकर श्वेतकेतु गुरू के आश्रम में गया । वहां वह बारह वर्ष तक रहा । उसने सभी वेदों की पढ़ाई की, खूब ज्ञान हासिल किया । इस पढ़ाई का नतीजा यह हुआ कि बड़े-बड़े पंडितों की सभा हो या और कुछ, श्वेतकेतु किसी से कम नहीं ठहरता था । अपनी लायकियत का उसे पूरा भान हो गया था । जाने-अनजाने अपने ज्ञान पर उसे गर्व भी होने लगा था ।

चौबीस वर्ष की उम्र में श्वेतकेतु अपने घर लौटा ।

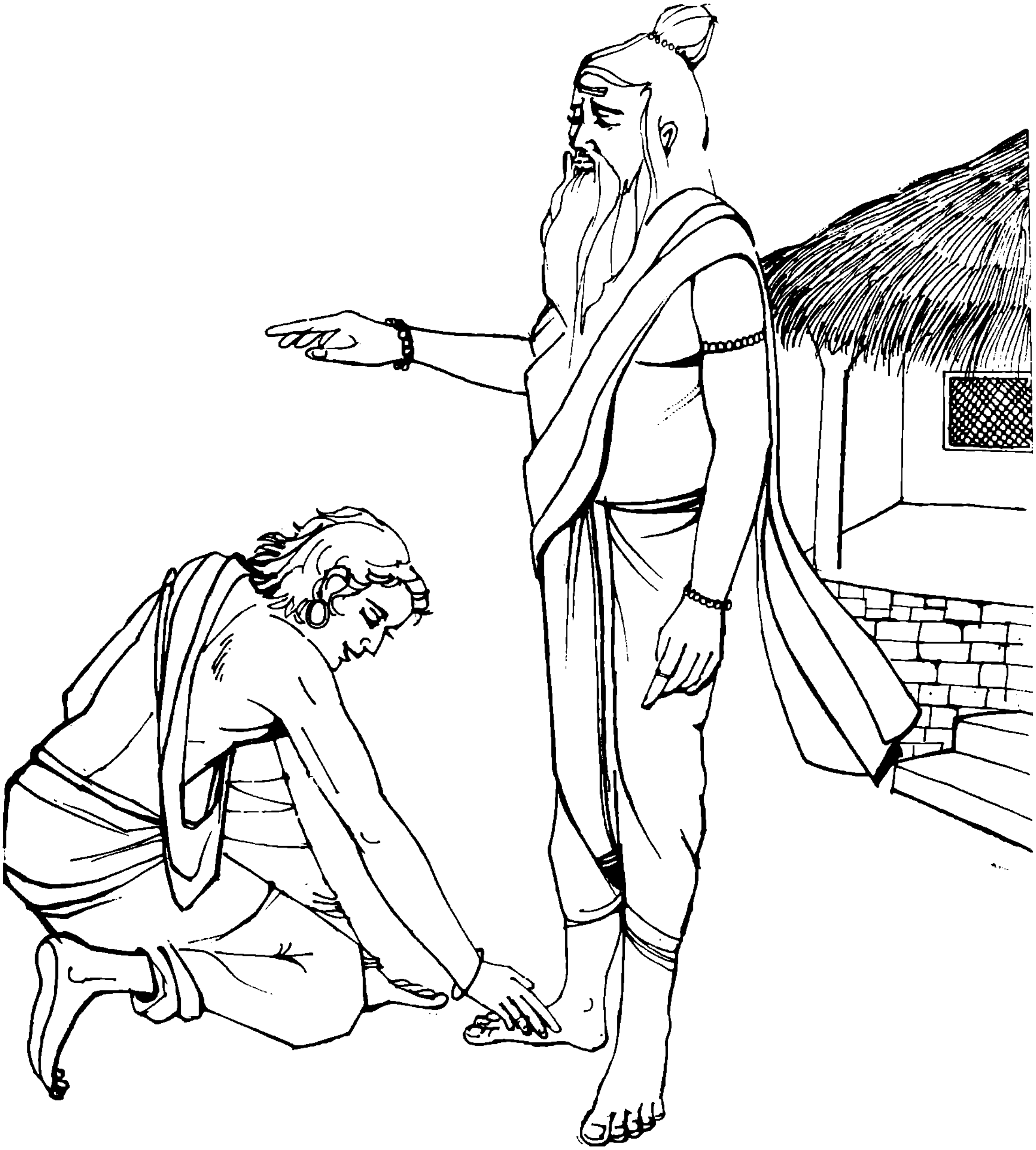

" चौबीस वर्ष की उम्र में श्वेतकेतु अपने घर लौटा।"

उसकी विद्वता और ज्ञान देखकर उद्दालक मुनि को बहुत खुशी हुई। लेकिन उसके व्यवहार में नम्रता न देखकर वे दुखी भी हुए। ज्ञान के साथ नम्रता न हो तो आदमी उदंड हो जाता है। उदंडता आदमी को नीचता की ओर घसीटती है। मुनि को अपने लड़के की चिंता थी, और वे मौके की ताक में थे। एक बार उन्हें श्वेतकेतु की गलती दिखाने का मौका मिल गया।

उस वक्त के राजा बड़े–बड़े यज्ञ किया करते थे। विद्वान ब्राह्मणों को यज्ञ के लिए बुलाया जाता था। ऐसे ही एक बड़े यज्ञ में जातुकार्य नाम के एक विद्वान को किसी दूर देश के राजा ने बुलाया। फिर कोशल, विदेह तथा काशी के राजाओं ने भी इसी ब्राह्मण को बुलावा भेजा।

श्वेतकेतु को इसका बड़ा दुख हुआ। उसने सोचा कि मैं खुद भी तो विद्वान हूं। मुझे क्यों नहीं बुलाया गया? वह अपने पिता के सामने जाकर खड़ा हुआ। उद्दालक ने बेटे को समझाया, "बेटा, ब्राह्मण को चाहिए कि वह ज्ञान से प्रेम करे, अधिकार और पैसों के पीछे पागल न हो। तू ज्ञान से भरा है लेकिन उसके घमंड से फूल भी गया है। यह घमंड तेरे ज्ञान को मिट्टी में मिला रहा है।"

श्वेतकेतु ने पिता की बात ध्यान से सुनी और समझ गया कि उसका ज्ञान अधूरा है। उसने अपने पिता को गुरू माना।

भारतीय दर्शन की खास बातों की जानकारी उद्दालक मुनि ने अपने लड़के को दी। उद्दालक मुनि ने श्वेतकेतु से कहा, "बेटा, तूने आसान विद्या तो पा ली है, लेकिन सबसे कठिन ज्ञान प्राप्त किया क्या?"

"कौन-सा ज्ञान?"

"वही जिसे पाना, देखना, सुनना बड़ा मुश्किल है।"

"ऐसा कौन-सा ज्ञान हो सकता है?"

उद्दालक मुनि ने कहा, "बेटा, वह ज्ञान देने से पहले मैं तुझे छोटे-छोटे उदाहरण देता हूं। इससे तू मेरी बात ठीक से समझ पायेगा।

" यह देख, मिट्टी का एक गोला है। इससे हम चाहें जितने तरह की चीजें बनाते हैं। हर चीज के हम अलग-अलग नाम रखते हैं। भले ही उनके नाम अलग-

अलग हों, वे सारी चीजें बरअसल मिट्टी से ही बनी होतीं हैं। उसी तरह हर जीवन के मूल में "सत" होता है। उसी से यह दुनिया पैदा हुई है।

"एक और उदाहरण देता हूं।

"सोने से अलग-अलग प्रकार के गहने बनाये जाते हैं। गहनों का नाम भी अलग-अलग होता है। लेकिन मूल चीज सोना ही है। उसी तरह "सत" है। इसी से प्रकृति के मृत और जीवित अंश बने हैं। इस "सत" का असली रूप जान लेना ही सही पढ़ाई है, वही सच्चे गुरू का उपदेश है।"

श्वेतकेतु एकदम चुप हो गया। यह ज्ञान तो उसे आजतक किसी ने नहीं दिया था। उसने अपने पिता को प्रणाम किया और बोला, "मुझे जिन गुरू ने ज्ञान दिया, उन्हें इन बातों का ज्ञान शायद न होगा। आज से आप ही मेरे गुरू हैं। आप मुझे वह असली ज्ञान दें।"

श्वेतकेतु उद्दालक मुनि के सामने बैठ गया।

उद्दालक मुनि अपने लड़के को दुनिया का मतलब समझाने लगे, "बेटा, यह दुनिया जब पैदा हुई, उस समय केवल एक "सत" था, दूसरा कुछ भी न था। कुछ विद्वानों का मत है कि शुरू में कुछ भी न था, शून्य था। उस शून्य में से ही यह दुनिया बनी। लेकिन तू सोच, क्या यह संभव है? जब कुछ भी न था तो कुछ बनेगा कैसे? किसी भी चीज को बनाने के लिए, कुछ-न-कुछ तो चाहिए ही। इसलिए मैं कहता हूं कि शुरू में एक "अस्तित्व" था। उसी में से इस संसार का इतना विशाल रूप बना है।

"इस अस्तित्व को ऐसा लगा कि वह अनेक रूपों में प्रकट हो। उसने आग का रूप लिया।

"आग को लगा कि वह दूसरे रूप में सामने आये। आग के बाद "पानी" बना। पानी ने "अनाज" को बनाया। इस प्रकार "सत" से आग, पानी और अनाज का जन्म हुआ। फिर उसके अलग-अलग रूप बने। हमें जो लाल रंग दीखता है, वह आग से बना है। सफेद रंग पानी से और काला रंग अनाज से। इसके अलावा जो चीज या जीव एकदम नये रूप में हमारे सामने आता है, वह इन तीनों

" श्वेतकेतु उद्दालक मुनि के सामने बैठ गया।"

को मिलाने से बना होगा। दुनिया के इन विविध रूपों की जड़ में अनाज, पानी और आग ही हैं।"

श्वेतकेतु ने कहा, "गुरूवर, एक शंका है। दुनिया का यह चित्र तो आपने बड़ी आसानी से समझाया। लेकिन यह "सत" आंखों से दिखायी नहीं देता, कानों से सुनायी नहीं देता, देह को उसका पता नहीं होता। फिर यह है, इसका क्या प्रमाण ?"

उद्दालक मुनि बोले, "मैं तुम्हें आसान उदाहरण देता हूं। उस बरगद के पेड़ से उसका एक फल तोड़ लो। उसे फोड़ो। क्या है उसके अंदर ?"

"बारीक-बारीक बीज हैं।"

"उसमें से एक बारीक बीज लो और उसे फोड़ो। अंदर क्या दिखायी देता है ?"

"कुछ भी नहीं।"

"श्वेतकेतु, तुम्हारी समझ से वहां कुछ भी नहीं है, लेकिन इतना मत भूलना कि उसी बीज में से इस विशाल बरगद का जन्म हुआ है। बरगद का कोई बहुत छोटा मूल तो वहां है जरूर। उस मूल में से ही इस पेड़ का इतना बड़ा रूप निकला है। सत्य की हालत भी ऐसी ही है श्वेतकेतु !"

श्वेतकेतु उदाहरण से भौंचक रह गया। उसने कहा, "महाराज, दुनिया का मूल अगर "सत" है, तो वह दिखायी क्यों नहीं पड़ता ?"

उद्दालक मुनि ने कहा, "ठहरो, मैं तुम्हें दूसरा उदाहरण देता हूं। नमक का एक बड़ा ढेला लो। उसे पानी में डालो। तुम देखोगे कि वह ढेला पानी में घुल जाता है, जैसे कि गायब हो गया है। इसका मतलब यह नहीं है कि नमक खत्म हो गया है। वह पानी की एक-एक बूंद में फैल गया है, समा गया है। उसी प्रकार "सत" का रूप है। बेटा, भगवान की इसी सारी दुनिया में वह फैला हुआ है। वह आखों से दिखायी नहीं देता।"

श्वेतकेतु ने कहा, "यदि वह आंखों से अगल दिखायी नहीं देता तो उसका ज्ञान किस तरह किया जाये?"

"यह एकदम आसान है" उद्दालक मुनि ने कहा, "जिसे ज्ञान पाने की इच्छा है, उसके लिए सभी रुकावटें अपने-आप दूर हो जाती हैं।

"एक आदमी को लुटेरों ने पकड़ा और उसकी सारी संपत्ति लूटने के बाद, उसकी आंखों पर पट्टी बांधकर कहीं दूर, बाहर गांव में उसे छोड़ दिया। उसकी हालत कैसी होगी? वहा कहां है, उसकी समझ में नहीं आयेगा। वह आंखें मलते हुए आसपास देखेगा, जगह को पहचानेगा। धीरे-धीरे उसे रास्ता दीखने लगेगा और वह घर की ओर चल पड़ेगा।

"बेटा, सच्चाई को खोजना भी ऐसा ही है। इसे खोजने के लिए अच्छा गुरू मिलना चाहिए। वही गुरू आंखों के ऊपर से अज्ञान की पट्टी हटा देगा।"

"आदमी को कई सांसारिक चीजें बांधती हैं। उसका भूतकाल भी उसे बांधे रखता है। ज्ञान पाने की कोशिश में वह मोह, पुराने रिश्ते-नाते सबके बंधन खोलकर फेंक देता है। ज्ञान पाने की भूख उसे सच्चे गुरू की ओर ले जाती है। जब उसे ज्ञान का पूरा अनुभव हो जाता है तब उसे "सत" का मतलब समझ में जाता है।

"ऐसा ज्ञान पाने पर आदमी और "सत" में कोई फर्क नहीं रह जाता है। श्वेतकेतु, इसका मतलब यह है कि हर जीव के मूल में "सत" है। यह "सत्" माने अपना ही रूप, अपनी ही आत्मा!"

श्वेतकेतु ने विनम्र भाव से कहा, "गुरूजी, आप कुछ उदाहरण देकर समझाइए तो समझना आसान हो जायेगा।"

उद्दालक मुनि ने कहा, "मधुमक्खी का उदाहरण लो। मधुमक्खी शहद का छाता बनाती है। अलग-अलग पेड़-पौधों, फूलों से वह शहद जमा करती है। मधु की बूंद यह नहीं कहती कि मैं अमुक अथवा अमुक पेड़ की हूं। वे बूंदें एक-दूसरे में मिल चुकी होती हैं। इसी प्रकार दुनिया के इस विशाल आंगन में हमारा रूप चाहे जो हो, बाघ, शेर, भेड़िया, मच्छर, चिड़िया या आदमी, आत्मा सबकी एक ही है। वह आत्मा माने ही "सत" है। वह "सत" ही हमारा खुद का रूप है। श्वेतकेतु, तुझमें आत्मा है, माने तू ही "सत" का रूप है। खुद का ज्ञान होना, आत्मा के रूप को समझना, यही संसार का सबसे बड़ा ज्ञान है।

"एक और उदाहरण देता हूं।

अपनी नदियां पूर्व से पश्चिम बहती हैं। वे एक समुद्र से, दूसरे समुद्र में मिल जाती हैं। समुद्र में उनका अलग नाम न रहकर, वे सब समुद्र हो जाती हैं। वे यह नहीं कहतीं कि मैं अमुक अथवा अमुक नदी हूं। यही बात हर जीव के लिए लागू होती है।"

यह आत्मज्ञान पाकर श्वेतकेतु को बड़ा संतोष हुआ। उद्दालक मुनि ने उससे कहा, "बेटा, अभी बहुत कुछ सीखना बाकी है। नींद, भूख, प्यास ये सभी शरीर के धर्म हैं, लेकिन इनका भी एक बहुत बड़ा मतलब है। उनके बारे में भी तुझे जानना चाहिए।"

बचपन से ही भूख, प्यास, नींद इन तीनों का श्वेतकेतु को अनुभव था। रोजाना की इन बातों का भी अपना अलग मतलब है, यह उसे पता ही न था। वह उत्सुकता से सुनने लगी।

उद्दालक मुनि उसे नींद व सपने के बारे में बताने लगे, "आदमी को नींद आ गयी है, तो वह जाग नहीं रहा है, ऐसा हम कहते हैं। लेकिन ऐसा नहीं होता है। उसका शरीर जागता नहीं होता है, लेकिन उसकी आत्मा जागती है। नींद का मतलब है, एक दूसरी दुनिया में कदम रखना।

"समझो, एक चिड़िया को डोरी में बांधकर रखा जाये तो वह सब दिशाओं में उड़ती है, छुटकारा पाने की कोशिश करती है, और अंत में थककर जहां बांधी गयी है, वहीं बैठ जाती है। मन का भी ऐसा ही है। मन अनेक दिशाओं की ओर भागता-दौड़ता है। जब उसके ध्यान में आता कि उसे कभी शांति नहीं मिलेगी, तब वह प्राण के पास, जीव के पास जाकर रुक जाता है। जीव ही मन को पकड़कर रखनेवाला धागा है। आदमी को सपना दिखायी देता है, तब शरीर से वह बिस्तरे पर होता है। उसका मन दूसरी जगहों पर घूमता रहता है।

"सपने के अंदर का आदमी तथा जागता आदमी, ये एक ही आत्मा के रूप हैं। आदमी सोया कि इस संसार से बाहर हुआ। श्वेतकेतु, जैसे आत्मा एक शरीर से दूसरे शरीर में जाती है, उसी तरह आदमी सोया कि एक दुनिया से दूसरी दुनिया में चला जाता है।

"जिस समय आदमी भूख लगने की बात करता है, तो उसका मतलब अनाज

कीं। बहुत सारे विद्वानों से बहस की। ऋषियों-मुनियों को अपने ज्ञान से आकर्षित किया। बड़े-बड़े राजाओं का ध्यान अपनी ओर खींचा।

एक बार श्वेतकेतु विद्वानों की एक सभा में गया। सभी विद्वानों में मैं ही सबसे बड़ा हूं, उसे यही साबित करना था। सवाल-जवाब शुरू हुए।

पांचालराज प्रवाहण जैबली से उसका विवाद हुआ। उन्होंने श्वेतकेतु से सवाल किया, "बेटे, तेरे पिताजी ने तुझे सारा ज्ञान दिया है न ?"

"जी हां, महाराज !"

प्रवाहण जैबली ने कहा, "आदमी मरने के बाद कहां जाता है, तुझे मालूम है ?"

"नहीं।"

"आदमी कैसे जन्म लेता है तुझे मालूम है ?"

"नहीं।"

जैबली ऋषि एक-के-बाद-एक सवाल पूछने लगे और श्वेतकेतु घबराकर नहीं, नहीं कहता रहा। अंत में उन्होंने कहा, "अरे, तूने जब सारा ज्ञान पा लिया है, तो फिर तू किसी भी सवाल का जवाब क्यों नहीं दे पा रहा है ?"

अपनी हार मानकर श्वेतकेतु घर वापस आया। उसका घमंड टूट चुका था। वह बहुत दुखी था।

वह अपने पिता के पास गया और सारी घटना उन्हें बतलाकर कहने लगा, "पिताजी, आपने इनमें से एक भी बात मुझे इससे पहले क्यों नहीं बतायी ? इन विषयों को मुझे क्यों नहीं पढ़ाया ?"

उद्दालक मुनि ने कहा, "बेटा, इन गहरे सवालों के जवाब मुझे भी मालूम नहीं हैं।"

उद्दालक मुनि को यह पता था कि ज्ञान पाने में किसी भी तरह की हीनता नहीं होनी चाहिए। किसी भी प्रकार का ज्ञान, कहीं से भी, किसी से भी पाना हो, तो उसमें संकोच नहीं होना चाहिए, छोटे-बड़े का भेद नहीं होना चाहिए। श्वेतकेतु और उद्दालक पांचालराज प्रवाहण के पास गये। उन दोनों ने प्रवाहण के पास से और ज्ञान प्राप्त किया।

" बेटा, इन गहरे सवालों के जवाब मुझे भी मालूम नहीं हैं ।"

वाद-विवाद करनेवाले, सभाओं को जीतनेवाले पंडित उस समय बहुत से थे। शूर, पराक्रमी राजा भी थे। शाप देनेवाले अथवा वर देनेवाले ऋषि भी बहुत से थे। लेकिन श्वेतकेतु इन सबसे निराला था। उसनें अपने समाज, अपनी मानव-जाति का विचार किया। अपना विकास किस प्रकार किया जाये, इसके बारे में सोचा। उस समय अपने यहां शादी-विवाह का कोई नियम न था। श्वेतकेतु ने विवाह-प्रथा शुरू की।

उस विद्वान, सच्चरित्र ब्राह्मण के शब्दों में बड़ी ताकत थी। उस युग से आज तक, हमारा समाज उसके बनायें नीति-नियमों का पालन करता चल रहा है। उसका नाम भारतीय तत्वज्ञान की आत्मा है।

समाज को ऊंचे चरित्र और सदाचार की राह बतानेवाला श्वेतकेतु, अपने जमाने में सच्ची राह पर चलनेवाला तपस्वी हो गया। ●

हमारे आगामी प्रकाशन

- सावित्री की कहानी
- संत मूलदास
- हजरत राबिया बसरी
- मीरा
- सच्ची मित्रता
- दैत्य से देव
- गुरू गोविंद सिंह
- कौन जीता?
- नटखट कृष्ण कन्हैया
- सच की जीत

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा की स्थापना १९३८ में महात्मा गांधी की प्रेरणा तथा पेरीन बहन केप्टन के सद्प्रयत्नों से हुई थी। इस संस्था की कोशिश ऐसी राष्ट्रभाषा विकसित करने की रही है, जसे ग्राम जनता ग्रासानी से समझ सके ग्रौर जो नागरी व उर्दू दोनों लिपियों में लिखी जा सके। वह भाषा है हिन्दुस्तानी!

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा दुनिया के सभी धर्मों से चुनी हुई, ज्ञान ग्रौर ग्रानन्द से भरी कहानियों की एक सौ किताबों का जो सेट बच्चों के लिए तैयार कर रही है, यह उसकी तीसरी किश्त है। इस सेट के हर किताब की कीमत दो रुपये होगी।

बच्चों की कहानियां

हिन्दुस्तानी प्रचार सभा
बंबई-४००००२